ओमशांति। बच्चे बैठे हैं किसके सन्मुख? मात–पिता व बापदादा; और यह तो बच्चे जानते हैं, भारत पर ही सारा खेल है। भारत ही सतयुग था, भारत ही अब कलियुग है। बच्चे जानते हैं, हमारी आत्माएँ बहुत उझानी हुई थी, अब बाप आए कर जगा रहे हैं। यह सिर्फ तुम बच्चों की ही बुद्धि में है, और कोई की बुद्धि में हो न सके। तुम बच्चे ही प०पि०प० के सन्मुख बैठे हो, जिसको ही कहते– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। तुम जानते हो हम सतयुग में देवी–देवता थे। देवता से क्षत्रिय, क्षत्रिय से वैश्य, वैश्य से शूद्र बने हैं। फिर अब हम ब्राह्मण बने हैं। यह .... ही स्वर्ग में था। सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई की बुद्धि में यह हो नहीं सकता है। कोई कह न सके, हम सतयुग में थे। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि किसकी भी बुद्धि में भी आए नहीं सकता, न कब सुन सकते हैं। पहले–2 है ही भारत खण्ड, और कोई धर्म न था। सतयुग का कोई को पता नहीं है; क्योंकि कब सतयुग में रहे ही नहीं हैं। वहाँ तो सिर्फ देवी–देवताएँ ही रहते हैं। सन्यासी लोग यह भी नहीं कह सकते कि हम सो देवी–देवता थे या हम स्वर्ग में थे। सिवाय तुम्हारे कोई कह न सके। तुमको भी अब पहचान मिली है। तुम जानते हो, हम ब्राह्मणों के सिवाय स्वर्गवासी कोई भी मनुष्य हो नहीं सकता, न कब होने ही वाले हैं। देवता धर्म वाले भी इस समय हिन्दू धर्म में कनवर्ट हो पड़े हैं। यह भी तुम जानते हो, हिन्दू धर्म वाले कौन हैं, किस धर्म के हैं। और कोई भी नहीं जानते। आर्यसमाजी या सिक्ख समाजी यह नहीं समझेंगे कि हम सतयुग में देवता थे, फिर क्षत्रिय बने। और धर्म वालों की बुद्धि में यह आय न सके। यह सिर्फ तुम्हारी ही बुद्धि में है– हम ब्राह्मण ही फिर सतयुग में देवता बन राज्य करते थे। भारत स्वर्ग था, और कोई धर्म न था। वह लोग स्वर्ग को जानते ही नहीं। हम–तुम भी नहीं जानते थे। अभी जब बाबा आय है तो आँख खुल गई है अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल गया है। तीजरी की कथा भी भगवानुवाच्य, अमरकथा भी भगवानुवाच्य। अब तुम बच्चों की बुद्धि में सृष्टि का चक्र फिरता है। जो भी ब्राह्मण सो देवी–देवता बनने वाले हैं उनके पास चक्र फिरता है– हम भारत में थे, भारत ही प्राचीन देश है। मनुष्य कहते हैं, लाखों ही वर्ष हुए जब सतयुग था। तुम कहते हो, 5000 वर्ष हुआ जब भारत में देवी–देवता धर्म था। अगर लाखों वर्ष देवी–देवता के धर्म को हुए होते, तो आदमशुमारी अनगिनत होती। पीछे जो इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आए हैं उन्हों की भी गिनती है। कहते हैं– 3000 वर्ष बिफोर क्राइस्ट, देवी–देवता धर्म था; 2000 वर्ष बिफोर, इस्लामी धर्म था। जानते हैं, इस्लामियों के बाद बौद्धी आए हैं। हिसाब साफ है। तो अगर लाखों की बात होती, भारत की संख्या सबसे जास्ती चाहिए; परन्तु क्रिश्चियन की जास्ती दिखाई पड़ती है; क्योंकि हिन्दू कनवर्ट हो गए हैं। भारतवासी भी यह नहीं जानते कि हमारा दुश्मन आधा कल्प से माया बनी है। वह है गुप्त। फिर दुश्मन आए हैं मुसलमान लोग। क्रिश्चियन तो बाद में आए हैं। मुसलमानों ने आकर मंदिर को लू(टा) था। इनके बाद क्रिश्चियन ने हाथ किया है। पहले भारत के दुश्मन मुसलमान थे। फिर पिछाड़ी में भी मुसलमान ही दुश्मन बनते हैं। लड़ाई भी यवनों और कौरवों की होनी है। रक्त की नदियाँ बहेंगी। हिन्दू–मुसलमानों का झगड़ा चला आता है। जबसे आए हैं तबसे रक्त की नदियाँ बही हैं। इन बातों को समझते नहीं हैं। यह समझते हैं, बरोबर घर की लड़ाई है; परन्तु वास्तव में, घर की नहीं है, परधर्म से है। देवताओं की तो बात ही नहीं। समझते हैं यह बड़ी गन्दी लड़ाई है; इसलिए कोशिश करते हैं आपस में न लड़े। तो बाप समझाते हैं अब तुम बच्चे जानते हो, हम प०पि०प० पास बैठे हैं, जिसको भक्तिमार्ग में गाते आते हैं। सतयुग–त्रेता में तो नहीं गाते हैं। तो तुम बैठे मात–पिता पास। मात–पिता का भी अर्थ तुम्हारे

में कोई पूरा नहीं समझते हैं, नहीं तो ऐसे मात–पिता से बहुत दिल लग जाए। बाप को याद करना पड़े। .... माता गॉड फादर की क्रियेटर कहते हैं, तो ज़रूर मदर भी होनी चाहिए न! हम आत्माओं का फादर वह है। फिर आत्मा जब जीव में आती है तो कहते हैं, शरीर को मात–पिता ने रचा। बेहद का बाप कहते हैं– मैं इस (ब्रह्मा) द्वारा तुम बच्चों को रचता हूँ। इनको माता बनाता हूँ। बाबा ने इसमें प्रवेश किया है हमको फिर से स्वर्ग का मालिक बनाने। हम पहले मूलवतन में थे। वहाँ रहते हैं प०पि०प०। उनके बच्चे वहाँ नंगे (शरीर रहित) रहते हैं। बाप नई दुनिया रचेंगे तो उनको ज़रूर पहले सूक्ष्मवतन रचना पड़े। बाद में स्थूलवतन। तो ब्रह्मा के तन में आय इनको माता बनाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा सो तो ब्रह्मा सबका बाप हो गया। कैसे? यह दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम जानते हो, प्रजापिता ब्रह्मा की हम औलाद हैं। पहले–2 जब बाप सृष्टि रचते हैं तो ज़रूर ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचे होंगे। ब्राह्मण होंगे संगमयुगी। यह है ब्राह्मणों की संस्था। तुम ब्राह्मणों को रच, फिर आदि सनातन देवी–देवता बनने लिए राजयोग सिखलाते हैं। तुम जानते हो, अभी हम ईश्वरीय औलाद बने हैं। असल हम नंगे थे। अभी हम जिस्म सहित ईश्वरीय औलाद बने हैं ब्रह्मा द्वारा। इसको कहा जाता है मुखवंशावली, प्रजापिता ब्रह्मा की मुखवंशावली। इतने ढेर बच्चे कोई पेड़ से थोड़े ही निकलेंगे। तुम जानते हो हम मात–पिता से 21 जन्मों लिए स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। सब ब्राह्मण कुल भूषण जो भी सुनते हैं, तो सन्मुख सुनने से नशा अच्छा ही चढ़ता है। तुम्हारा बुद्धियोग है मात–पिता के साथ। कैसे युक्ति से रचना रचते हैं! गाते भी हैं, पतित–पावन आओ। तो ज़रूर पतित सृष्टि में आना है। ऐसे नहीं कि प्रलय हो जाती है। यह सब शास्त्रों में गपोड़े हैं। कलहयुग के बाद सतयुग आना है। भारत सतयुग में था, कोई धर्म न था। अब कलहयुग में है। भारत नया था तो और कोई खण्ड न था। अभी भारत पुराना है तो अनेक खण्ड हैं। बुद्धि में नॉलेज बहुत अच्छी है कोई को भी समझाने लिए। भारत स्वर्ग था तो कितना धनवान था! हीरे–जवाहरों के महल थे। 5000 वर्ष की बात है– भारत क्या था! वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी डीटी सॉवरंटी थी। और कोई धर्म था नहीं। ऑलमाइटी अथॉरिटी तो बाप को ही कहा जाता है। उसने ही स्वर्ग की स्थापना की। तुम बच्चे अब जान गए हो, कैसे 84 जन्म का चक्कर काटा है, कैसे वर्णों में ड्रामा अनुसार होते आए हैं। और कोई धर्म वाले इन वर्णों से ट्रांसफर हो न सके। तुम जानते हो, बरोबर सो देवी–देवता थे, फिर हम ही सबसे पहले आए थे। अब पिछाड़ी में जाना है, फिर पहले–2 आना है। तुम्हारे पास यह गोला(ड्रामा का चक्कर) बहुत अच्छा है। सतयुग में भारत कितना सुखी था। नाम ही है– सुखधाम, स्वर्ग। देवता वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, फिर वैश्य–शूद्र वर्ण, फिर संगम पर है ब्राह्मण वर्ण। ब्राह्मणों को ही राजयोग सिखावेंगे, शूद्रों को तो नहीं सिखावेंगे। ब्रह्मा मुखवंशावली बनेंगे तब उनको राजयोग सिखाऊँगा। जो कल्प पहले बच्चे बने हैं, वर्सा लिया है, वह आते जावेंगे; जैसे कल्प पहले आए थे। तो भारत में ही देवताओं का राज था। यह भी समझाया है– आधा कल्प बाद देवताएँ फिर वाममार्ग में जाते हैं, नीचे गिरते हैं। तो इनकी निशानियाँ बनाय रखी हैं। जगन्नाथ के मंदिर में निशानियाँ लगी हुई हैं– देवताएँ कैसे वाममार्ग में गिरते हैं। अंदर तो र०कृ० के साँवरे चित्र रखे हैं, बाहर में दिखाते हैं– वाममार्ग में जाने से यह हाल देखो, काला मुँह कर दिया है! बाप समझाते हैं– माया का प्रवेश होने से, फिर काम चिक्षा पर बैठने से, काले हो गए हैं। अभी फिर चिक्षा से उतर कर, ज्ञान चिक्षा पर बैठने से गौरा बनेंगे। तुम जो सुन्दर थे, श्याम हो गए हो। तुम हर एक श्याम–सुन्दर से पहले गोरे थे, फिर आधा कल्प माया के डसने से तुम श्याम बन गए हो। पहले–2 कृष्ण को कहते हैं श्याम–सुन्दर। कृष्ण गोरा था; परन्तु कृष्ण को तो (काला) नहीं कहेंगे न। कृष्ण का मुँह काला नहीं करना चाहिए। गोरा था, फिर भिन्न–2 नाम–रूप में आते–2 कला

कम होती जाती है, अंत में काला हो जाता है; इसलिए इनका नाम श्याम–सुंदर पड़ा है। अभी सब श्याम हैं। श्याम से सुंदर बन रहे हैं। बाप आए ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। तो बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। फरमान करते हैं– मुझे याद करो। भक्तों को थोड़े ही भगवान फरमान करते हैं। फरमान मुख द्वारा होता है। सो एक ही बार फरमान करते हैं– मामेकम् याद करो, चक्कर को याद करो, शंखध्वन करो। अपन से पूछो, हम शंख बजाते हैं? कई बच्चियाँ कहती हैं– हम शंख नहीं बजाए सकते हैं, धारणा नहीं होती है। शंख न बजावेंगे तो शंखधारी कैसे होंगे! स्वदर्शनचक्रधारी हो सकते हो! यह तो समझते हो, बरोबर 84 जन्मों का चक्कर लगाया है। यह तो तुमने समझा, बाबा ने शंख ध्वनि की, तुमने धारण किया। फिर और को भी समझाना है। बाप और वर्से को नहीं भूलना है। तुम भारतवासी ही इन बातों को जानते हो, और क्या जाने! वर्ण भी भारतवासियों लिए ही हैं। और कोई की भी बुद्धि में हो न सके। भारतवासी ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले हैं। आर्य और अनार्य कहते हैं अर्थात् सुधरीले और अनसुधरीले। देवी–देवता सुधरीले थे। माया ने आकर अनसुधरीला किया। भारत आर्य थे, बहुत धनवान थे, अब कंगाल है। अनसुधरीला, मूर्ख, नालायक को कहा जाता है। कोई ने आर्य नाम कहा तो सब कह देते, नहीं तो उनको आर्य थोड़े ही कहेंगे। वह तो हैं स्वर्ग की देवी–देवताएँ। स्वर्ग का रचता है हेविनली गॉड फादर। उसने ही स्वर्ग का मालिक बनाया। भारत सोने की चिड़िया थी; परन्तु ऐसा किसने बनाया, क्या हुआ, कोई भी नहीं जानते। जो स्वर्गवासी थे, वही 84 जन्म भोगते अब नर्कवासी बने हैं। सारा खेल भारत पर ही है। कितनी सहज बात है! अच्छा, इतना कोई न भी धारण करे, सिर्फ बाबा को याद करे। बाबा कहते हैं– बच्चे, नंगे आए पार्ट बजाया, अब तुम्हारा पार्ट पूरा हुआ। अब फिर वापस जाना है। और धर्म वाले कह न सके। तो समझाय सकते हो– सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातें रहती हैं। बड़े–2 इम्तहान पास करने वालों को बड़ी खुशी रहती है– अभी हम फलाना बनेंगे। जैसे बैरिस्टर होते हैं, उनमें भी नम्बरवार होते हैं। कोई लाख–2 भी कमाते, कोई देखो दो–चार सौ भी मुश्किल। अब तुम बच्चों को भी इतनी खुशी रहनी चाहिए। परमात्मा टीचर बन हमें पढ़ाते हैं। वह है नॉलेजफुल। अगर कोई कहे सर्वव्यापी, तो क्या सब नॉलेजफुल हो गए! सर्वव्यापी के ज्ञान ने ही इस भारत को गिराया है। बाप बैठ समझाते हैं, अच्छी रीति समझ फिर धारण करो। धारणा न होने से कच्चे हो जाते हैं। पास तो नम्बरवार ही होते हैं। सर्जन में भी नम्बरवार होते हैं। कोई–2 तो रोज़ 10–20 हज़ार कमाते हैं, बड़े–2 आदमियों के केस लेते हैं। बाबा का ऐसा भी देखा हुआ है– डॉक्टर से सफा मिले, झट डॉक्टर को मकान बनाय देते। पैसे वाले लोग हैं। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए– भगवान हमको पढ़ाते हैं। बड़े ते बड़ा इम्तहान है, हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं! इतना अटेन्शन भी देना चाहिए न! अटेन्शन देने वालों का नम्बर ऊँच हो जाता। रेस करनी चाहिए। घुटका क्यों खाना चाहिए! बाप भी कहेंगे, फॉलो करो माँ–बाप को। यह कहते हैं, हम भी स्टूडेन्ट्स हैं, हमको पढ़ाने वाला बाबा है। तो मम्मा–बाबा से रेस कर तख्त नशीन बनना है। बाबा पुरुषार्थ ज़ोर से कराते हैं। भारत की कहानी सुनानी है– स्वर्ग था, फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। यह चक्कर को समझना है। अब बाप फरमान करते हैं देही–अभिमानी बनो। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे, अंत मते सो गते हो जावेगी। कहते भी हैं– अंत काल जो लक्ष्मी सिमरे....। अंत काल जो शिवबाबा सिमरे कहत त्रिलोचन..... सो जीवनमुक्ति पद पाय लेते हैं। तो बच्चों को बार–2 समझाते रहते हैं। बाबा .... देते हैं धारण करने लिए। हर एक को बुद्धि में धारण करना है। तुम्हारी बुद्धि में नॉलेज है। बाबा कहते हैं, मैं आत्माओं से बात कर रहा हूँ। आत्मा में नॉलेज भर रहा हूँ।

ऐसा टीचर कब देखा, जो कहे– हमारी आत्मा तुमको भी समझाती है। सन्यासी कह न सके। वह तो परमात्मा ही कहते हैं– मैं ज्ञान का सागर हूँ। मेरे में सारी नॉलेज है। बीज को क्या नॉलेज होगी! बीज अगर चेतन होता तो बतलाता कि मेरे से यह झाड़ निकला। ...ह भी मनुष्य सृष्टि का उल्टा झाड़ है। बीज ऊपर में है। बाप को याद ज़रूर करना पड़ता है। कन्या को वर्से का नशा नहीं रहता है, बच्चे को बाप के वर्से का नशा रहता है। यहाँ फिर कन्याओं को जास्ती नशा रहता है। उस लौकिक बाप का नहीं तो पारलौकिक बाप का नशा ज्यादा रहता है और मेल्स को कम रहता है। ..... कहा जाता है, दोनों को हाथ–2 में देकर चलना है। बाप कहते हैं तुम ज्ञान का हथियाला बाँध लो। प्रतिज्ञा करो। भगवानुवाच्य, मैं (तुमको) स्वर्ग का महाराजा–महारानी बनाता हूँ। विख के ऊपर देखो कितना झगड़ा पड़ता है। मैजॉरिटी फिमेल की है। कोई स्त्रियाँ भी मेल को तंग करती हैं। इनको फिर पूतना–सूपनखा आदि कहा जाता है। बातें सब इस समय की हैं। कंस–जरासंधी, अकासुर–बकासुर सब अभी के नाम हैं। ..... है वह बाप समझाते हैं। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। मृत्युलोक का भी अंतिम जन्म है। मृत्युलोक खत्म हो अमरलोक स्थापन होता है। अमरनाथ चाहिए (जो) अमरनाथ बनावें। तुम अमरनाथ बन रहे हो। तुम्हारे पास कब अकाले मृत्यु न आवेगा। सदैव जीते रहो। सतयुग में मरने का बात नहीं होता; इसलिए वहाँ शोक होता नहीं। कायदा है एक शरीर छोड़ दूसरा नया लेना है। बीन–बाजा बजते हैं और ही खुशी होती है। पुराना छोड़ नया लेंगे। तो जितना पढ़ेगा उतना पद पावेगा। बाबा पूछते हैं, कौन रेस में तीखे जाते हैं? दो की एक जैसी रेस हो नहीं सकती। कोई सर्विस अच्छी करते हैं, कोई (क्या) करते हैं। हो तो सब स्टूडेन्ट्स– स्त्री–पुरुष, जवान–बूढ़े, बच्चे सब एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। वण्डर्स दिखाते हैं न! यह है नर्क के वण्डर्स। सबसे वण्डरफुल है वैकुण्ठ। यहाँ के वण्डर्स हैं देखने के। वैकुण्ठ वण्डर है सुख भोगने का कि तुम अब वैकुण्ठ के मालिक बन रहे हो। खुशी का नगाड़ा अंदर बजना चाहिए– बाबा से कितना बड़ा वर्सा लेते हैं। प्रतिज्ञा करो, हम बाबा की मत पर चलते हैं, शिवबाबा को शिव बालक बनाते हैं। शिव पर बलि चढ़ने की अभी की बात है। तुम्हारे पास जो कखपन है वह वर्से में देते हो तो बच्चा हुआ न! इसलिए यह बाल लीला आदि के सा० होते हैं। कोई ध्यान में जाते हैं, कोई नहीं जाते हैं। जानते हैं एम–ऑब्जेक्ट है प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बनने की। त्रेता के अंत तक कितने प्रिंस–प्रिंसेज़ बनेंगे। वह सब यहाँ पुरुषार्थ अनुसार बन रहे हैं। 16108 की माला दिखाते हैं। बॉम्बे में बहुत बड़ी माला ल०ना० के मंदिर में दिखाते हैं। फिर उनको खींच राम–2 करते हैं। कोई हनुमान की पूजा, कोई कृष्ण की पूजा करते हैं। भला इससे क्या होगा! पूछना चाहिए क्या तुमको कृष्ण के राज्य में जाना है? कृष्ण से मिलना है? क्यों इनको याद करते हो? अभी तुम बच्चे जानते हो, बाबा आकर श्री राधे–श्री कृ० बनाते हैं। गाते भी हैं– भज राधे गोविंद, चलो वृंदावन; परन्तु ऐसे थोड़े ही जप–तप करने से जावेंगे। यह भक्ति आधा कल्प चलती है, फिर मैं आकर मुक्ति–जीवनमुक्ति देता हूँ। भारत अब लास्ट नम्बर है, फिर नम्बरवन आवेगा। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ना चाहिए कि श्री शिवबाबा हमको श्री ल०, श्री नारायण बनाते हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाबा हमको फिर स्वर्ग का श्रेष्ठ बना रहे हैं, खुद नहीं बनता। कहते हैं– मैं श्री–2 हूँ, तुमको श्री बनाने वाला। असुर बनाने वाली है माया। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग।